कानपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता : एक अध्ययन

डॉ0 अर्पिता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रो0 एच0 एन0 मिश्रा कॉलेज ऑफ एजूकेशन, कानपुर

सारांश

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, सामाजिक व्यवस्था के बिना उसके अस्तित्व की कल्पना शायद ही की जा सकती है और इस सामाजिक व्यवस्था में सामंजस्यपूर्ण रूप से जीवित रहने के लिए मनुष्य को समायोजन करना आवश्यक है। सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति के उपरान्त एक बच्चे के स्कूल और कार्यक्षेत्र में सफल होने की सम्भावना में बढ़ोत्तरी होती है और यह मानसिक स्वास्थ्य में सुधार व्यक्ति को बेहतर नागरिक बनाता है। सामाजिक परिपक्वता दूसरों के साथ अच्छी तरह से जुड़ने की क्षमता है और उन्हें आपके साथ सहयोग करने के लिए प्रेरित करती है। इस क्षेत्र में अनुसंधान और रुचि में वृद्धि के परिणामस्वरूप नए सिद्धांत और रणनीतियां सामने आई हैं, इस तथ्य के संबंध में कि यह विद्यालय प्रणाली के आन्तरिक विकास को बढ़ावा देता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने कानपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के सामाजिक परिपक्वता स्तर के बारे में जानने की आवश्यकता महसूस की, क्योंकि इस अवस्था की अग्रिम कड़ी में वे समाज के सक्रीय सदस्य के रूप में प्रतिभाग हेतु तत्पर रहते हैं।

संकेत शब्द : *सामाजिक परिपक्वता, उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी।*

प्रस्तावना :–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, सामाजिक व्यवस्था के बिना उसके अस्तित्व की कल्पना शायद ही की जा सकती है और इस सामाजिक व्यवस्था में सामंजस्यपूर्ण रूप से जीवित रहने के लिए मनुष्य को समायोजन करना आवश्यक है और यह परिपक्वता पर भी निर्भर करता है और सामाजिक नियमों और मानदंडों को समझते हुए और उस ज्ञान का प्रभावी ढंग से उपयोग करते हुए उचित रूप से जिम्मेदार तरीके से समायोजित और कार्य करने की इस क्षमता को सीखना सामाजिक परिपक्वता के रूप में जाना जाता है।

सामाजिक परिपक्वता एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग आमतौर पर दो तरह से किया जाता है, पहला–व्यवहार के संदर्भ में जो वयस्कों के मानकों और अपेक्षाओं के अनुरूप होता है और दूसरा– व्यवहार के संदर्भ में जो अवलोकन के तहत व्यक्ति की उम्र के लिए उपयुक्त है, सामाजिक परिपक्वता माता–पिता सहयोग करते हैं सामाजिक वातावरण की विस्तृत धारणा जो सामाजिक परिस्थितियों को प्रभावित करने में मदद करती है और सामाजिक व्यवहार के पैटर्न को विकसित करती है।

सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति के उपरान्त एक बच्चे के स्कूल और कार्यक्षेत्र में सफल होने की सम्भावना में बढ़ोत्तरी होती है और यह मानसिक स्वास्थ्य में सुधार व्यक्ति को बेहतर नागरिक बनाता है। सामाजिक परिपक्वता दूसरों के साथ अच्छी तरह से जुड़ने की क्षमता है और उन्हें आपके साथ सहयोग करने के लिए प्रेरित करती है। सामाजिक रूप से परिपक्व होना सामाजिक रूप से जागरूक अर्थात कल्याणकारी होना और सामाजिक कौशल से परिपूर्ण होना। सामाजिक जागरूकता; सहानुभूति, सामंजस्य, सहानुभूति सटीकता और सामाजिक अनुभूति को इंगित करती है जबकि सामाजिक कौशल; समकालिकता, आत्म–संरक्षण, प्रभाव और सामाजिक सरोकार को दर्शाता है।

इस प्रकार जब एक किशोर सामाजिक रूप से परिपक्व हो जाता है तो वह आत्मप्रेरित होकर प्रयास करता रहता है और अपने समय का उपयोग करने, अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने, समाज में विभिन्न लोगों के साथ व्यवहार करने की भावना विकसित करने, सौम्य व्यक्तिगत संबंध विकसित करने, समायोजन पूर्ण गुणवत्ता प्राप्त करने की क्षमता विकसित करता है। वह समस्या और महत्वपूर्ण मुद्दों का सामना करते समय उचित पर निर्णय लेने और उचित कार्यप्रणाली का चयन करने की क्षमता विकसित करता है। इस प्रकार बच्चा जितना अधिक सामाजिक रूप से परिपक्व होगा, समाज में सामाजिक परिपक्वता उतनी ही अधिक होगी और राष्ट्र उतना ही परिपक्व होगा।

इस क्षेत्र में अनुसंधान और रुचि में वृद्धि के परिणामस्वरूप नए सिद्धांत और रणनीतियां सामने आई हैं, इस तथ्य के संबंध में कि यह विद्यालय प्रणाली के आन्तरिक विकास को बढ़ावा देता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने कानपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के सामाजिक परिपक्वता स्तर के बारे में जानने की आवश्यकता महसूस कीक्योंकि इस अवस्था की अग्रिम कड़ी में वे समाज के सक्रीय सदस्य के रूप में प्रतिभाग हेतु तत्पर रहते हैं।

समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण–

सामाजिक परिपक्वता – सामाजिक परिपक्वता किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत, पारस्परिक और सामाजिक पर्याप्तता के लिए उपयुक्त विकास की प्रक्रिया है जो समाज में प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए आवश्यक है।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी – कक्षा 11 व 12 की शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियो को इसके अंतर्गत चयनित किया गया है

अध्ययन का उद्देश्य–

- उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के कम उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियो की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियो की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना –

1– उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

2– व्यक्तिगत पर्याप्तता, पारस्परिक समौचित्य और सामाजिक उपयुक्तता के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

3– उच्च माध्यमिक स्तर के उच्च और निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो के सामाजिक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

4– सामाजिक परिपक्वता के उच्च और निम्न उपलब्धि मध्य निम्न 3 कौशलो के आधार पर पर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो में सार्थक अन्तर नही होगा – व्यक्तिगत पर्याप्तता, पारस्परिक समौचित्य और सामाजिक उपयुक्तता ।

5– शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की सामाजिक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

6– व्यक्तिगत पर्याप्तता, पारस्परिक समौचित्य और सामाजिक उपयुक्तता के आधार पर शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के सामाजिक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध अध्ययन की जनसंख्या व न्यादर्श –

अध्ययन की जनसंख्या में कानपुर जिले के सीबीएसई, यू पी बोर्ड के स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियोको सम्मिलित किया गया हैं।

वर्तमान अध्ययन में कानपुर जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 320 विद्यार्थियो को न्यादर्श के लिए चयनित किया गया। ये विद्यालय सीबीएसई व यू पी बोर्ड से संबद्ध अंग्रेजी माध्यम के स्कूल थे। शोधकर्ता कानपुर जिले के शासकीय एवं नगरीय क्षेत्रों के विद्यालयों के चयन हेतु साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन का प्रयोग करता है। सैंपल में 160 लड़के और 160 लड़कियां शामिल थीं।

शोध अध्ययन हेतु उपकरण–

शोधकर्त्री ने नलिनी राव द्वारा मानकीकृत उपकरण अर्थात् सामाजिक परिपक्वता पैमाने को अपनाया। वर्तमान अध्ययन के लिए उपकरण को भारतीय स्थिति के अनुसार अपनाया गया है।उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियो की सामाजिक परिपक्वता को मापने के लिए शोधकर्त्री ने मानकीकृत उपकरण प्रयुक्त किया। विद्यार्थी को चार प्रतिक्रियाएँ– पूर्ण सहमत, सहमत, असहमत, पूर्ण असहमत चार बिंदु रेटिंग पैमाने में से चयन कर उत्तर अंकित करना था।

आंकड़ों का संकलन–

वर्तमान अध्ययन के लिए आवश्यक डेटा किशोरों द्वारा परिवार, शिक्षकों, दोस्तों और समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ बातचीत करते समय विभिन्न परिस्थितियों के दौरान किशोरों द्वारा लिए गए निर्णय के बारे में जानकारी थी, जिसमें वे लाइव टेस्ट में व्यक्तिगत पर्याप्तता से संबंधित प्रश्न होते हैं। पारस्परिक समौचित्य और सामाजिक उपयुक्तता जो सामाजिक परिपक्वता के उप कौशल हैं। कानपुर जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रो से कक्षा 11वीं और 12वीं के विद्यार्थियो पर मानकीकृत परीक्षण के प्रशासन के माध्यम से आंकड़े एकत्रित किये गए। वर्तमान शोध कार्य में चयनित न्यादर्श के अनुसार जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, कानपुर जिले के सीबीएसई व यू पी बोर्ड के अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयो में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ने वाले 320 विद्यार्थियो द्वारा 90 कथनों का उत्तर प्राप्त किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण–

प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण श्रेणीवार प्राप्तांकों की गणना करके किया गया। टूलकिट के साथ प्रदान किए गए अंक कुंजी के आधार पर उम्मीदवारों द्वारा चुने गए उत्तर के लिए अंक निर्धारित किए गए थे। व्यक्तिगत पर्याप्तता, पारस्परिक समौचित्य, और सामाजिक उपयुक्तता जो सामाजिक परिपक्वता के उप–स्तर के लिए व्यक्तिगत रूप से अंकन किया गया था। व्यक्तिगत विद्यार्थियो की सामाजिक परिपक्वता के कुल अंक प्राप्त करने के लिए इन अंकों को जोड़ा गया था। इस उपकरण के माध्यम से एकत्र किया गए आंकडे कच्चे होने के कारण चर के बारे में कोई जानकारी देने में असमर्थ था। इसलिए इसे व्यवस्थित रूप से व्यवस्थित किया

गया था। शोधकर्त्री ने कक्षा 11वीं और 12वीं के विद्यार्थियो की लिंग, शैक्षिक उपलब्धि और क्षेत्र को प्रस्तुत करने वाले आंकड़ों को वर्गीकृत किया गया, फिर शोधकर्त्री ने सांख्यिकीय विधियों जैसे माध्य, मानक विचलन और टी–टेस्ट का उपयोग करके आंकड़ों का विश्लेषण किया।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष–

शोधकर्त्री ने आंकड़ों के विश्लेषण व् व्याख्या से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये–

- उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों और छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता के मध्य सार्थक अंतर है। छात्रों की तुलना में छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता का स्तर अधिक प्राप्त हुआ है।
- व्यक्तिगत पर्याप्तता, पारस्परिक समौचित्य और सामाजिक उपयुक्तता के संदर्भ में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों और छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता के मध्य सार्थक अंतर है। उपरोक्त सभी तीन उप–श्रेणियों के संदर्भ में सामाजिक परिपक्वता का स्तर छात्रों की तुलना में छात्राओं में अधिक है।
- व्यक्तिगत पर्याप्तता, पारस्परिक समौचित्य और सामाजिक उपयुक्तता के संदर्भ में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के उच्च और निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो के सामाजिक परिपक्वता के मध्य सार्थक अंतर प्रदर्शित हुआ। उपरोक्त सभी तीन उप–श्रेणियों के संदर्भ में सामाजिक परिपक्वता का स्तर कम उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो की तुलना में उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो में अधिक है।
- शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियो के सामाजिक उपयुक्तता के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक परिपक्वता का स्तर अधिक है, विद्यार्थी लगभग समान हैं।
- व्यक्तिगत पर्याप्तता, पारस्परिक समौचित्य और सामाजिक पर्याप्तता के संदर्भ में शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियो के सामाजिक परिपक्वता के मध्य सार्थक अंतर प्राप्त नहीं किया गया। उपर्युक्त तीनों उप–श्रेणियों के संदर्भ में सामाजिक परिपक्वता का स्तर लगभग समान है।

सुझाव–

- लड़कों की सामाजिक परिपक्वता लड़कियों की तुलना में कम होती है। इसका तात्पर्य यह है कि लड़कों को प्रारंभिक सामाजिक विकास में माता–पिता, शिक्षकों और साथियों से अधिक ध्यान व बेहतर मार्गदर्शन और समर्थन की आवश्यकता होती है।
- उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों की सामाजिक परिपक्वता निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों की तुलना में अधिक है अत उनको बेहतर कोचिंग, मार्गदर्शन की आवश्यकता है जो न केवल कम उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ाता है, बल्कि उनके सामाजिक विकास में भी मदद करता है।
- शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियो में व्यक्तिगत पर्याप्तता और पारस्परिक समौचित्य कौशल थोड़ा अधिक है जो ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियो के विषय में यह अपेक्षा करता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियो को इन दो तत्वों में सुधार करने के लिए आत्म निर्देशन और सम्प्रेषण क्षमता पर अधिक ध्यान देना चाहिए। जहाँ ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों में सामाजिक उपयुक्तता का कौशल अधिक है, वहीं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियो में मानसिक सहिष्णुता और प्रतिबद्धता और परिवर्तन के लिए खुलेपन की क्षमता विकसित करने की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। वाद–विवाद जैसी प्रतियोगिताएं एक अवसर है जिसे

अधिक बार आयोजित किया जाना चाहिए और विद्यार्थियो को ऐसी परियोजनाएं सौंपी जानी चाहिए जो समाज में व्यावहारिक पहलुओं के बारे में उनकी जागरूकता में वृद्धि कर सके।

- सामाजिक परिपक्वता का विकास तब अधिक होता है जब बच्चों को पर्याप्त स्वायत्तता की स्वीकृति का वातावरण प्रदान करने के साथ–साथ उनकी क्षमता का निर्माण करने का अवसर प्रदान किया जाता है विद्यालय और घर छात्रों के लिए व्यवस्थित और सहायक वातावरण विकसित और व्यवस्थित करके सामाजिक परिपक्वता को प्रभावित किया जा सकता हैं।
- माता–पिता और शिक्षकों को भी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि घर और विद्यालय के वातावरण में भी लैंगिक पूर्वाग्रह मौजूद न हो।
- छोटे बच्चों को स्वस्थ और सकारात्मक सार्थक सम्बन्ध विकसित करने मे आत्म–साक्षात्कार की विधियों सहायक सिद्ध हो सकती हैं। माता–पिता को बच्चे के प्रयासों का सम्मान करना चाहिए और अपने बच्चे की अच्छा करने की क्षमता में विश्वास को स्वीकार करना चाहिए।
- सामाजिक परिपक्वता को बढ़ाने के लिए न केवल बच्चों की क्षमता को मापने बल्कि माता–पिता को बच्चे और साथियों से संबंधों को बढ़ावा देने के लिए भी प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।
- शिक्षकों की यह जिम्मेदारी है कि वे व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम आयोजित करें ताकि शिक्षार्थी न केवल सामाजिक परिपक्वता प्राप्त कर सकें बल्कि व्यक्तित्व के एकीकृत विकास में भी भाग ले सकें।
- शैक्षणिक और व्यावहारिक जीवन में सफल होने के लिए सामाजिक परिपक्वता नितांत आवश्यक है। इसे पाठ्यचर्या और सह–पाठयक्रम गतिविधियों के माध्यम से विकसित किया जा सकता है।
- उच्च सामाजिक स्थिति वाले प्रतिष्ठित व्यक्तियों को अपने अनुभव साझा करने और छात्रों को आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची–

Agrawal, Y.P. (1988), Research in Emerging field of Education, New Delhi, Strealing Publication Private Ltd.

Best, John W. (2002), Research in Education, New Delhi, Printice Hall of India Private Ltd.

Buch, M. B. (1983), Third Survey of Research in Education, New Delhi, NCERT

Buch, M. B. (1988), Fourth Survey of Research in Education, New Delhi, NCERT

Buch, M. B. (1988-92), Fifth Survey of Research in Education, New Delhi, NCERT

Good, C.V. (1959), Dictionary of Education, New York: McGraw-Hill book corporation

Kaul, Lokesh (1996), Methodology of Educational Research, New Delhi, Vikas Publishing House Private Ltd.

Mangal, S.K. (2007), Essentials of Educational Psychology, New Delhi, Printice Hall of India Private Ltd.

Rao, Nalini (1986), Manual for Rao's Social Maturity Scale, Agra, National Psychological Corporation

Sharma, K.K. (2007), Effective manners of Research Methodology, New Delhi, Mahaveer and Sons

How to cite reference of this paper-

Singh, A. (2022). कानपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता : एक अध्ययन. *Educational Metamorphosis, 1*(1), 49-54.